RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

# भारतीय आधुनिक महिलाओं के सामाजिक जीवनचक्र का अध्ययन

[1]Ravi Kumar & [2]Dr. Brijlata Sharma

*[1]Ph.D Research Scholar, Dept. Of. Hindi, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand*
*[2]Assistant Professor, Dept. Of. Hindi, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand*

**ARTICLE DETAILS**

**Article History**
*Published Online:* 15 April 2019

**Keywords**
भारतीय आधुनिक समाज, महिला, जीवन चक्र.

**ABSTRACT**

नारी का सम्मान करना एवं उसके हितों की रक्षा करना हमारे देश की सदियों पुरानी संस्कृति है । यह एक विडम्बना ही है कि भारतीय समाज में नारी की स्थिति अत्यन्त विरोधाभासी रही है । एक तरफ तो उसे शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है तो दूसरी ओर उसे 'बेचारी अबला' भी कहा जाता है । इन दोनों ही अतिवादी धारणाओं ने नारी के स्वतन्त्र बिकास में बाधा पहुंचाई है ।आधुनिक समाज में महिलाओं की भूमिका कई कारकों के प्रभाव के परिणामस्वरूप बहुत कुछ बदल गया। बेहतर या बदतर के लिए, यह मेरे लिए न्याय करने के लिए नहीं है। शायद समाज भूमिकाओं के ऐसे वितरण के साथ रह सकता है। और, शायद एक दिन, एक व्यवसायी महिला की छवि के साथ पर्याप्त खेलने के बाद, एक महिला फिर से चूल्हा के संरक्षक के रूप में अपनी पूर्व भूमिका को फिर से हासिल करना चाहती है।

वर्तमान में, परिवार का ऐसा मॉडल सबसे लोकप्रिय हो रहा है, जहां एक महिला, एक पुरुष की तरह, पहले और उसके बाद ही परिवार को अपना करियर बनाती है। बच्चे पृष्ठभूमि में फीका पड़ जाते हैं, और परिवार की भलाई सबसे महत्वपूर्ण कारक बन जाती है। मैं यह नहीं कह रही हूं कि एक महिला परिवार बनाने के लिए बिल्कुल भी प्रयास नहीं करती है, वह निश्चित रूप से उसे बनाएगी। हालांकि, घर में बच्चों की उपस्थिति के बाद भी, वह अपना सारा समय परिवार की भौतिक स्थिति में सुधार करने के लिए समर्पित करने की कोशिश करेगी, बच्चों को दादी और नानी की देखभाल के लिए देगी। महिलाओं की यह भूमिका अक्सर पुरुषों को पसंद आती है, हालांकि, सभी पति अपनी पत्नियों के साथ इस भूमिका को साझा नहीं करना चाहेंगे।दूसरी बात आपको प्रभावित करने पर ध्यान देना चाहिए आधुनिक समाज में महिलाओं की भूमिका, - यह वह है जो एक महिला वित्तीय स्वतंत्रता के लिए प्रयास करती है। ऐसी महिलाएं फिर से आर्थिक रूप से स्वतंत्र महसूस करने के लिए एक शानदार कैरियर बनाना चाहती हैं। इस प्रकार, महिलाएं फिर से पुरुषों की भूमिका पर कब्जा कर लेती हैं।एक महिला एक नई भूमिका पर प्रयास करने के लिए खुश है, और इसमें उसे व्यवसाय में परिवर्तन की सुविधा है। लंबे समय तक, मुख्य रूप से पुरुषों द्वारा नेतृत्व के पदों पर कब्जा कर लिया गया था, हालांकि, हाल ही में, इस प्रवृत्ति में काफी बदलाव आना शुरू हो गया है। हम राजनीति में ही इसके अच्छे उदाहरण देख सकते हैं। कूटनीति, एक तेज दिमाग, संसाधनशीलता और एक महिला की समझदारी उसे एक अपरिहार्य नेता और बड़ी फर्मों और उद्यमों का सफल प्रमुख बनाती है।

## प्रस्तावना:

आज आधुनिक समाज मेंएक पुरुष और एक महिला के बीच संबंध लगातार बदल रहे हैं। हालाँकि कई सदियों में पुरुषों की भूमिका बहुत ज्यादा नहीं बदली है , लेकिन महिलाओं की भूमिका नाटकीय रूप से बदलने लगी है। एक महिला एक पुरुष के साथ बराबरी पर रहना चाहती है , और यह कैरियर , वित्तीय स्वतंत्रता और रोजमर्रा की जिंदगी दोनों पर लागू होता है।हमारी भारतीय सभ्यता और संस्कृति , विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता और संस्कृति में से एक मानी गयी है और हमारी भारतीय सभ्यता और संस्कृति से ही विश्व के कई सारी परंपराओं का जन्म हुआ है इस तरह से हम कह सकते हैं कि . हमारी भारतीय परंपरा कई सारी परंपराओं की जन्म दात्री है और इसके साथ साथ हमारे भारतीय सभ्यता और संस्कृति में जो स्थान नारी को दिया गया है वह स्थान किसी और को प्राप्त नही है क्यूंकि नारी ही हमारे समाज में अलग अलग . रुपों से अपने आप को प्रकट करती है और अपने दायित्व का निर्वाहन करती है, जो सहन शक्ति नारी के अंदर है वह सहन शक्ति संसार के किसी और प्राणी के अंदर नही है , हम सभी के मानव जीवन में जिस तरह से नारी प्रेम का संचार अपने विभिन्न रुपों से करती है , ऐसा प्रेम इस संसार का कोई भी प्राणी प्रकट नही कर सकता . नारी ही है जो एक होते हुये भी कई सारे रुपों में खुद को साबित करती है , कहीं मां के रुप में तो कहीं बहन के रुप में तो कहीं बहू के रुप में तो कहीं पत्नी के रुप में.

RRIJM 2015, All Rights Reserved

**आधुनिक समाज और नारी**

भारतीय सभ्यता और संस्कृत में स्त्री ही सृष्टि की समग्र अधिष्ठात्री है, समस्त सृष्टि ही स्त्री है क्यूंकि हमारे ब्रहमांड में बुद्धि, निद्रा, सुधा, छाया, श्क्ति, त्रस्णा, जाति ,लज्जा, शांति, क्षधा, चेतना और लक्ष्मी आदि अनेक रुपों में स्त्री ही व्यापत है भारतीय इतिहास में रानी लक्ष्मीबाई ., जीजाबाई, अहिल्या, सावित्री आदि नारियों ने अपने क्षमता के बल पर खुद को प्रमाणित किया और नारी की गौरवशाली परंपरा को आगे बढाने का काम किया है हम यह .कह सकते हैं कि नारी इस ब्रहमांड के विधाता की प्रतिनिधी है.

इस धरती पर जब इंसान किसी भी विकट स्थिति में खुद को पाता है या जब वह खुद को बेबस , लाचार पाता है उस समय इंसान के मुह से सिर्फ और सिर्फ एक ही शब्द निकलता है और वह है मां क्यूंकि ममता रुपी छांव ही वह .छांव है जिसमें आकर इंसान को सबसे ज्यादा सूकून मिलता है और इस जहां के सारे दर्द और तकलीफ से इंसान खुद को महफूज पाता है और मां, नारी का ऐसा रुप है जिससे नारी के समस्त रुपों का प्रार्दुभाव हुआ है.

लेकिन आज के वक्त में , समाज में, महिलाओं और बच्चियों की स्थिति के बारे में जब सोचते हैं , तब मन बहुत ही ज्यादा व्यथित हो जाता है क्यूंकि आज के समय में नारी हर तरह से संर्घष कर रही है , नारी अपने असतित्व को बनाये रखने के लिए संर्घष कर रही है, नारी अपने सम्मान को बनाये रखने के लिए संर्घष कर रही है , नारी खुद को साबित करने के लिए संर्घष कर रही है परंतु इतने संर्घष के बाद भी नारी ने खुद को सबसे ज्यादा स्थापित किया है, अपने आप को हर एक क्षेत्र में साबित करने में सफलता भी पायी है और अपने जुझारु व्यक्तित्व और सहनशीलता की वजह से ही आज नारी हर एक क्षेत्र में अपनी बुलंदी का झंडा गाड रही है.

इन सब के बावजूद जो बात मन को सबसे ज्यादा तकलीफ देती है, वह है, कि नारी ही सबसे ज्यादा त्याग क्यूं करे ? सारा दर्द सिर्फ नारी के लिए ही क्यूं ? हर तरह के शोषण का शिकार आखिर नारी ही क्यूं होती है? जो हम सभी की जननी है, जो हम सभी की पालक है , उसी के ऊपर आखिर इतना अत्याचार क्यूं और आखिर कब तक ऐसा होता रहेगा?

हर तरफ सिर्फ और सिर्फ नारी की चीख ही सुनाई देती है कहीं. नारी का मानसिक शोषण हो रहा है, तो कहीं नारी का शारीरिक शोषण हो रहा है , कहीं नारी दहेज की आग में जल रही है तो कहीं तेजाब में झुलस रही है , कहीं नारी पुरुष समाज के तानों को सह रही है तो कहीं झूठी इज्जत और झूठी शान के नाम पर नारी की हत्या की जा रही है और तो और सबसे ज्यादा दर्दनाक पहलू यह है कि गर्भ में आते ही , इस दुनिया में कदम रखते ही उनको खत्म कर दिया जाता है. गर्भ में आने के बाद से लेकर जीवन के आखिरी सांस तक नारी पर सिर्फ और सिर्फ अत्याचार ही होता है और इसी अत्याचार के बीच में नारी अपने विभन्न रुपों से इस समाज का पालन पोषण भी करती है और खुद के असतित्व को बनाये रखने के लिए इस समाज से लडाई भी करती है ... वाह, विधाता की अनमोल रचना नारी !, जो अपना संपूर्ण जीवन दूसरों के लिए त्याग करके गुजार देती है और खुद दर्द सहती रहती है ऐसे में बस एक ही सवाल बार बार मन में कौंधता . रहता है कि आखिर कब तक नारी अग्निपरीक्षा देती रहेगी?

आज के समय में जब हम सभी खुद को आधुनिक कहते हैं , ऐसे में सबसे बडा सवाल यही है , कि क्या वाकई हम सभी आधुनिक हैं? सिर्फ आधुनिक कपडे पहनने से और आधुनिक वस्तुओं का प्रयोग करने मात्र से कोई आधुनिक नही बन सकता, समाज और इंसान आधुनिक बनता है अपने विचारों से और मुझे यह कहने में बिल्कुल भी हिचक नही हो रही कि हम बदलते वक्त में आधुनिक नही बल्कि और ज्यादा अज्ञानी हो गये हैं, क्यूंकि हम खुद को आधुनिक मानें भी तो आखिर किस आधार पर गर्भ में पल रही बचिच्यों को मार देना क्या . आधुनिकता है? बच्चियों के पढने लिढने में बंदिसें लगाना क्या आधुनिकता है ? बच्चियों का शोषण करना क्या आधुनिकता है?

नारी को दबा कर रखना और उनके सपनों को तोड देना क्या आधुनिकता है? दहेज के नाम पर नारी पर अत्याचार करना और जला देना क्या आधुनिकता है ? हवस और वासना के नाम पर नारी की आत्मा के साथ खेलना क्या आधुनिकता है ?? खोखली इज्जत और शान के नाम पर बच्चियों की हत्या कर देना क्या आधुनिकता है ? कार्यस्थल पर महिलाओं के साथ गैर मानवीय व्यव्हार करना क्या आधुनिकता है? और ना जाने कितनी ऐसी घटनायें हैं , जो हमारी बच्चियों के साथ , महिलाओं के साथ हमारे समाज में हो रहे हैं लेकिन कभी सामने नही आते...क्या यही आधुनिकता है?

नारी के दर्द और तकलीफों के बारे में सोचते सोचते बस एक ही बात मन में आती है कि , हमारी पुरातन सभ्यता और संस्कृत में नारी को जो स्थान दिया गया था उसे हम सभी ने मिलकर नारी से छीन लिया है, इसके लिये समाज का हर एक व्यक्ति जिम्मेदार है और हम सभी ने नारी को घुट घुट कर जीने के लिये मजबूर कर दिया है। हम सभी को यह समझना होगा कि, अगर नारी जगत जननी है तो नारी काली भी है .

और जब नारी अपने विनाशकारी रुप में आती है उस समय .प्रलय रुपी विनाशलीला में सब कुछ खत्म कर देती है

आधुनिक समय में, उन लोगों के लिए जीना बहुत मुश्किल है, उदाहरण के लिए , शादी की अवधि कभी नहीं हुई। क्योंकि लोगों को यह समझाना मुश्किल है कि ऐसा इसलिए हुआ है

कि कोई अविवाहित अपराधबोध नहीं है कि उनके पास रजिस्ट्री कार्यालय को पार करने का मौका नहीं है।

**आधुनिक समय में महिलाओं को कुछ निम्न श्रेणियों में विभाजित करते हैं:**

1. महिला नेता हैं। ऐसी महिलाएं अपने दम पर लगभग सब कुछ हासिल कर लेती हैं। वे उन क्षणों का इंतजार नहीं करते हैं जब धब्बा उनका सामना करने के लिए बदल जाएगा। वे केवल अपनी ताकत , भाग्य में विश्वास करते हैं, और किसी से भी मदद की उम्मीद नहीं करते हैं।

2. महिलाएं कैरियर हैं। उनके लिए, पुरुषों की दुनिया लगभग आखिरी जगह पर है। उनकी स्थिति यह है पहले : व्यवसाय में ऊंचाइयों को प्राप्त करने के लिए, और फिर आप एक परिवार बनाने के बारे में सोच सकते हैं। और फिर, शुरुआत के लिए , बस प्रतिबिंबित करें। कोई नहीं जानता कि इन रहस्यमय प्राणियों के सिर में क्या है वे ! साक्षात्कार-आत्मसे प्रेरित हैं।

3. महिलाएं गृहिणी हैं। वे विवाहित और अविवाहित दोनों हो सकते हैं। और यह आवश्यक नहीं है कि वे एक गृहिणी की भूमिका निभाना पसंद करें। कुछ पुरुष अपनी पत्नियों को काम करने की अनुमति नहीं देते हैं। क्या आप कारणों में रुचि रखते हैं? वे पूरी तरह से सामान्य और सरल हैं : ईर्ष्या, अधिकार, भय, स्वार्थ। और महिलाएं, अफसोस, हर पति नहीं पूछता कि क्या वह काम करना चाहता है या अगर वह बेरोजगारी से संतुष्ट है।

4. महिला पेशा। मॉडल "तारकीय", कलाकार, अनुवादक, मार्गदर्शक, पत्रकार, पत्रकार कई लोग अपने काम के ... प्यार में पागल हैं और इसे कभी भी अपने सपनों के आदमी या अपने जीवनसाथी में बदलना शुरू नहीं करेंगे। उनकी आत्मा का प्रत्येक कप नारीवाद से भरा हुआ है।

5. महिलाओं की शादी हो चुकी है। विवाहित हैं , लेकिन यह ज्ञात नहीं है कि वे खुश हैं या नहीं। लेकिन उन्हें अपनी वैवाहिक स्थिति पर बहुत गर्व है। और अगर वे बच्चे भी प्राप्त करने में कामयाब रहे तो खुशी दोगुनी हो जाएगी। -

**आधुनिक समाज में महिला समलैंगिकता**

समलैंगिकता मानव स्वभाव के विपरीत एक घटना है। यौन आकर्षण मूल रूप से एक बच्चे की गर्भाधान के लिए बनाया गया है, अर्थात् समय में मानव जाति की निरंतरता के लिए। लेकिन एक मामले में पुरुषों में एक गुदा वेक्टर की - वास्तव में लड़कों के लिए एक - उपस्थिति के मामले में समलैंगिक आकर्षण मौजूद है। यह इसलिए बनाया गया था कि एक गुदा वेक्टर वाला एक व्यक्ति, किशोरों के लिए तरस रहा था और इस आकर्षण को प्रस्तुत कर रहा था , वे पैक में अपनी विशिष्ट भूमिका को पूरा करना चाहेंगे उन्हें शिकार - और युद्ध की कला सिखाने के लिए।

यदि गुदा वेक्टर अविकसित या कुंठित है , तो उच्च बनाने की क्रिया नहीं होती है , और फिर हमें पीडोफिलिया के मामलों का सामना करना पड़ता है। या बच्चों की लालसा वयस्क पुरुषों के लिए आकर्षण में तब्दील हो सकती है। यह कुछ हद तक स्थिति को आसान बनाता है , लेकिन आम तौर पर समाज में बहुत नकारात्मक प्रतिक्रिया का कारण बनता है। कई विकसित देशों में , पुरुष समलैंगिकता को कानूनी मान्यता प्राप्त है , लेकिन अधिक बार यह उन सभी गुदा पुरुषों से प्रतिरोध का सामना करता है , जो सबसे हिंसक होमोफोब हैं। वे कहते हैं कि जानवरों के डर से उन्हें छोड़ दिया जाता है। पशु पैक में , छोड़ दिया गया, अर्थात, समलैंगिक संबंधों के एक अनुष्ठान के अधीन, पुरुष को जीवन के साथ असंगत अनुभव करते हुए , काटने के अधिकार से वंचित किया जाता है।

महिला समलैंगिकता के साथ एक पूरी तरह से अलग स्थिति। मादा समलैंगिकता के प्रणालीगत वेक्टर मनोविज्ञान के अनुसार मौजूद नहीं है। यह प्रकृति द्वारा नहीं दिया गया है। एक महिला और एक महिला के बीच कोई आकर्षण नहीं हो सकता है। यही कारण है कि समाज दो महिलाओं के कथित समलैंगिक संबंधों पर काफी शांति से प्रतिक्रिया दे रहा है। वास्तव में, इस तरह के रिश्ते सेक्स पर आधारित नहीं होते हैं, लेकिन समलैंगिकता और भावनात्मक संबंध पर आधारित होते हैं।

**भारतीय समाज में नारी की भूमिका**

प्राचीनकाल से ही नारी को इन्सान के रूप में देखने के प्रयास सम्भवत कम ही हुये हैं । पुरुष के बराबर स्थान एवं : वह : अधिकारों की मांग ने भी उसे अत्यधिक छला है । अत आज तक'मानवी' का स्थान प्राप्त करने से भी वंचित रही है ।

**चिन्तनात्मक विकास:**

सदियों से ही भारतीय समाज में नारी की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही है । उसी के बलबूते पर भारतीय समाज खड़ा है । नारी ने भिन्न भिन्न रूपों में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका- निभाई है । चाहे वह सीता हो, झांसी की रानी, इन्दिरा गाँधी हो, सरोजनी नायडू हो ।

किन्तु फिर भी वह सदियों से ही क्रूर समाज के अत्याचारों एवं शोषण का शिकार होती आई हैं । उसके हितों की रक्षा करने के लिए एवं समानता तथा न्याय दिलाने के लिए संविधान में आरक्षण की व्यवस्था की गई है । महिला विकास के लिए

RRIJM 2015, All Rights Reserved 

आज विश्व भर में 'महिला दिवस' मनाये जा रहे हैं । संसद में 33 प्रतिशत आरक्षण की मांग की जा रही है ।

इतना सब होने पर भी वह प्रतिदिन अत्याचारों एवं शोषण का शिकार हो रही है । मानवीय क्रूरता एवं हिंसा से ग्रसित है । यद्यपि वह शिक्षित है , हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है तथापि आवश्यकता इस बात की है कि उसे वास्तव में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक न्याय प्रदान किया जाये । समाज का चहुँमुखी वास्तविक विकास तभी सम्भव होगा । आज जरूरत है नारी को समय की मुख्यधारा से जोडने की । आज भी नारी ममतामयी है त्यागमयी है । नारी त्याग और साधना के बलबूते पर समाज के प्रत्येक पहलू से जुड़ी है । वह पढी लिखी है ।-आत्मनिर्भर है, अपने अधिकारी एवं कर्तव्यों के प्रति सचेत है , संघर्षरत है । यद्यपि नारी शिक्षा से आज कामकाजी महिलाओं की संख्या मे वृद्धि हुई है । हमारे समाज में उसकी निःस्वार्थ सेवा हर क्षेत्र में है ।

तथापि वह नौकरी पेशा न होकर गृहणी होते हुये भी घरेलू दायित्वों का निर्वाह निष्ठापूर्वक करती है । किन्तु फिर भी उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है । कामकाजी महिलाएँ तो दोहरे स्तर पर पारिवारिक और सामाजिक शोषण की शिकार हैं ।

जैसे वैसे भारतीय नारी के भी-जैसे समय आगे बढ़ रहा है वैसे-कदम आगे बढ़ रहे हैं । आज वह'देवी' नहीं बनना चाहतीं , वह सही और सच्चे अर्थों में अच्छा इंसान बनना चाहती है । नैतिक मूल्यों और मानवीय मूल्यों को नकारा नहीं जा सकता । हमारे पारम्परिक चरित्र नैतिक मूल्यों की धरोहर हैं । पौराणिक चरित्रों के आदर्श हमारी जड़ें है । आज के संदर्भ में उपयुक्त लगने वाले उनके गुणों को तथा शाश्वत आदर्शो को हमें अपनाना चाहिए । आज की जुझारू महिला का व्यक्तित्व उसकी कार्यक्षमता में झलकता है और आज की संघर्षशील नारी को एक नहीं कई अग्निपरीक्षाएं देनी पडती हैं । सारी दुनिया में आज महिला दिवस मनाये जा रहे हैं ।

संसद में उनके हितों की रक्षा हेतु 33 प्रतिशत आरक्षण की मांग की जा रही है । इससे आधी दुनिया कही जाने वाली महिलाओं की दशा में कोई परिवर्तन आएगा , इसकी तो कोई संभावना नहीं है मगर लोगों का ध्यान कुछ देर के लिए इस ओर अवश्य जाएगा क्योंकि इस अवसर पर पत्र पत्रिकाओं में -महिलाओं की समस्याओं से सम्बन्धित कुछ लेख भी छपेंगे और कुछ गोष्ठियों आदि के आयोजन भी होंगे ।

अब समय आ गया है कि महिलाओं को अधिकार देने तथा उन्हें लैंगिग भेदभाव से मुक्ति दिलाने के मार्ग मे आने वाली बाधाओं तथा अन्य खामियों पर भी विचार किया जाए । इस बात को समझा जाना चाहिए कि केवल साधनों की उपलब्धि तथा महिलाओं की उन तक पहुंच से ही वांछित लक्ष्यो की प्राप्ति नहीं हो पाएगी बल्कि इस सबके लिए जरूरी है कि लोगों की सोच में एक व्यापक परिवर्तन लाया जाए । विशेषकर पुरुषो की सोच में परिवर्तन की व्यापक रूप से आवश्यकता है । सोच में यह परिवर्तन केवल सरकारी योजनाओं तथा कानूनों से ही संभव नहीं हो सकता है । इस मामलें में तो जनता की व्यापक सहभागिता आवश्यक है । लोगों में जन जागरूकता आवश्यक है ।

पुरुषों को भी इस बात के लिए मनाना होगा कि वे अपने कुछ विशेषाधिकारों को त्यागें जिससे महिलाओं को लाभ प्राप्त हो सके । इस प्रक्रिया में गैर सरकारी संगठनों को भी बड़े पैमाने पर शामिल करना होगा । महिलाओ के अधिकारो तथा उनकी स्थिति में सुधार लाने के लिए संघर्ष मेंउ केवल महिलाओं को ही लडाई नहीं लडनी है बल्कि पुरुषों को भी इसमें अपना योगदान करना होगा ।

विशेषज्ञों ने इस बात को पाया है कि महिलाओं की पराश्रयता , उनका शोषण तथा समाज की गतिविधियों में उनकी सीमित सहभागिता का कारण महिलाओं की अपनी अक्षमता अथवा इस क्षेत्र में आगे न बढने देने का पुरुषों का षडयंत्र नहीं है । हमारे देश में लैंगिक भेदभाव की प्रणाली तथा उसके कारण सामाजिक आचार विचार ने ही महिलाओं के प्रति एक-दुराग्रहर्ष्टा भावनाओ को बढावा दिया है ।

हमारा भारतीय समाज ऐसा है जिसमें लडके को ही प्राथमिकता दी जाती है । लडके को ही आगे वंश चलाने वाला तथा परिवार की विरासत आदि का उत्तराधिकारी माना जाता है । यह देखा गया है कि इस प्रकार की स्थितियों में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं को दोयम समझा जाता है ।

इसलिए जरूरी है कि अगर हमें स्थितियो में सुधार करना है तो हमें किसी भी ऐसे विकास कार्यक्रम में पुरुषो तथा महिलाओ को समान रूप से शामिल करना होगा हमे काफी कुछ बदलाव लाना होगा । उदाहरण के लिए हमें उन कुछ परम्परागत तथा धार्मिक् रीति रिवाजी को बदलना होगा जोकि-

- महिलाओं को पुरुषों के मुकाबले निचले स्तर पर रखते हैं ।
- शुरू से ही हम लडकियों से यह अपेक्षा करते हैं कि वे घर गृहस्थी का काम सीखें जबटि लडकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे परिवार के लिए रोजीरोटी कमाने का हुनर सीखें ।-

इसके परिणाम यह होता है कि जब कभी लडकियों के ऊपर परिवार के भरण पोषण के लिए आजीविक् कमाने की-जिम्मेदारी आती है तो वह कामकाज के लिए अपने आपको प्रशिक्षित नहीं पाती है या पर्याप्त कौशल पाने मे सक्षम नहीं होती हैं। इसका परिणाम यह होता है कि रोजगार के क्षेत्रों में शोषण का शिकार होती हैं ।

इसके अतिरिक्त हमारे समाज की अपनी कुछ रीतियां हैं , जोकि महिलाओं के प्रति भेदभाव को बढ़ाती हैं । इनमें दहेज

प्रथा, लड़के के जन्म पर समारोह तथा लड़की के जन्म पर अप्रसन्नता व्यक्त करना , पुरुष द्वारा ही सामाजिक एवं धार्मिक कृत्य करना , पर्दा प्रथा , गर्भस्थ शिशुओं का लिंग परीक्षण तथा बालिका भ्रूणों का गर्भपात , लडके के लिए इलाज तथा अन्य उपचार आदि नैतिकता व चरित्र के बारे मे महिलाओं और पुरुषों के प्रति दोहरे मानदण्ड , लड़कियों और महिलाओं के लिए अनेक सामाजिक वर्जनाएं तथा पुरुषों के लिए स्वच्छंदता आदि शामिल है ।

इसके अलावा महिलाओ से कई अन्य क्षेत्रों मे भी भेदभाव होता है , भले ही कानून इस प्रकार के भेदभाव को वर्जित करता है । रोजगार व सम्पत्ति के अधिकार में इस प्रकार का भेदभाव स्पष्ट दिखाई देता है । जहां तक पैतृक सम्पत्ति का मामला है पुरुष ही वहां सम्पत्ति का वारिस व नियंत्रणकर्ता होता है । इसी प्रकार रोजगार के क्षेत्र में महिलाओं को समान अवसर दिए जाने की बात कही जाती है लेकिन वास्तविकता यह है कि वहां भी उनसे भेदभाव होता है । ऐसे भी कई अवसर आते हैं जबकि उनका कई तरीकों से शोषण होता है । महिलाओं के हित में विधेयक लाना तथा सरकार द्वारा उनके विकास के लिए विभिन्न परियोजनाएं बनाने के लिए प्रयास उचित हैं, लेकिन जिस बात की सर्वाधिक आवश्यकता है वह यह है कि इसे एक सामाजिक आदोलन बनाया जाए ।

निःसंदेह सरकार इस बारे में एक जागरूकता तो उत्पन्न कर सकती है लेकिन इसके प्रति गतिशीलता की भावना तो जनता के मध्य से ही उठनी चाहिए ।

लेकिन इस बारे में दुख की बात यह है कि कुछ नहीं हो रहा है । विडम्बना यह है कि महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए अतीत में जिस प्रकार के समाज सुधार आदोलन हुए थे वैसे दोलन आज नहीं हो रहे हे । सरकारी कार्यक्रम अभी तक जनता को इस प्रकार के अभियानों में प्रेरित करके नई पहल कराने में विफल रहें हैं । समाज आप के प्रति निष्ठावान , उत्साही लोगों व संगठनो को इस दिशा में आगे बढ़ना होगा ।

**उपसंहार**

महिलाओं के बिना , समाज में कई समस्याओं का सामना करना असंभव होगा। आखिरकार , महिलाओं का मनोविज्ञान पुरुषों से पूरी तरह से अलग है। मादा आंख क्या देखती है पुरुष आंख नहीं देखता है। एक महिला जो सोचती है वह हमेशा एक पुरुष द्वारा नहीं समझा जा सकता है।लेकिन जब यह सामंजस्य महिला और पुरु)ष रूप में होता है (, तो समाज संतुलित विकसित होता है।आधुनिक समाज में महिलाओं की भूमिका बहुत स्पष्ट हो रही है। और यह हर साल अधिक से अधिक महत्वपूर्ण होता जा रहा है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**


1. अब्रामोविच एनवाय।. नारी और पुरुष संस्कृति की दुनिया। एम ।फ्री पथ :, 1913।
2. कामुकता की सामाजिक समस्याओं )60 के दशक -90 के दशक की पहली छमाही गोल द्वारा.आई.एस / पर एनोटेट किया गया ( एसपीबी। आईपी :संकलित। एसपीबी।\u200b\u200bआरएएस, 1995 की शाखा।
3. एंटोनोव ए.आई. सोवियत रूस में पदावनति और पारिवारिक संकटकिस :े दोष देना है और क्या करना है? // मास्को विश्वविद्यालय का बुलेटिन। सेर। 18. समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान। 1995, नंबर 2।
4. अंगारकोवा एस.वी. ओ वेनिंगर के सिद्धांत के अलावा। Polotsk: प्रकार। एचक्लाईचको .वी., 1910।
5. अरसानुकेव एम। एस।महिलाओं की व्यावसायिक गतिविधियों और मातृत्व कार्यों पर उनका प्रभाव। लेखक। जिले मोमबत्ती। ... अर्थव्यवस्था, विज्ञान। एम।आईएसआई यूएसएसआर एकेडमी ऑफ साइंसेज :, 1982।
6. Astafievपी.ई. सेक्स के मनोविज्ञान के वैज्ञानिक आधार के रूप में मानसिक लय की अवधारणा। एम। विश्वविद्यालय। टाइप करें। : एम। कटकोवा, 1882।
7. अस्थमा P.E. एक महिला की मानसिक दुनिया, उसकी विशेषताएं, उत्कृष्टता और कमियां। एम। विश्वविद्यालय। टाइप करें। एम। : कटकोवा, 1881।
8. अख्मेडोवा ई.ए. समाजवाद में सुधार की प्रक्रिया में सोवियत महिलाओं की बढ़ती सामाजिक गतिविधि। लेखक। जिले मोमबत्ती। ... दर्शन। विज्ञान। बाकूअज़रबैजान स्टेट यूनिवर्सिटी का नाम किरोव :, 1988 है।
9. अश्किनाज़ी आई.जी. स्त्री और पुरुष। ओटो वेनिंगर और उनकी पुस्तक<Пол и характер>। सेंट पीटर्सबर्गबुवाई :, 1909।
10. बाबेवा एल.वी., कोज़लोव एम.पी., लापिना टी.पी., रेज्निचेंको एल.ए.,तारसी ईवा.ई।, होल्ट श रूस में कृषि सुधार और महिलाओं.एल. रूसी विज्ञान फाउंडेशन :और पेंशनरों की स्थिति। एम।, 1994।
11. बाबेवा एल.वी. एक सामाजिक मोड़ में रूसी महिलाएंकाम :, राजनीति, रोजमर्रा की जिंदगी। एम। रूसी सार्वजनिक विज्ञान फाउंडेशन। : रिपोर्ट।1996।


RRIJM 2015, All Rights Reserved 

12. सफेद ए। लिंग और चरित्र के बारे में सूत्रधार। 1911 //रूसी इरोस, या रूस में प्रेम का दर्शन।अनि। V.P. Shestakov। एम।प्रगति :, 1991।
13. बेर्डेव एन। सेक्स और प्यार के तत्वमीमांसा। 1907 // रूसी इरोस, या रूस में प्रेम का दर्शन। अनि। V.P. Shestakov। एम।प्रगति :, 1991।
14. Brovएस.वी. उद्योग में महिला श्रम की सामाजिक समस्याएं )Sverdlovsk और चेल्याबिंस्क क्षेत्रों में उद्यमों पर समाजशास्त्रीय अनुसंधान पर आधारित मोमबत्ती। दर्शन। विज्ञान। ... । लेखक। जिले(Sverdlovsk, 1968।
15. बुकानोव्स्की ए.ओ., बेट्ज़ एल.वी.Transsexualism। सामाजिक और जैविक पहलू //शारीरिक नृविज्ञान ओटीवी के पहलू में महिला। / आईईए आरएएस :अक्ष्यानोवा एम। .ए.एड। जी, 1994।
16. वेनिंगर ओ। लिंग और चरित्र। जुनून और कामुकता की दुनिया में आदमी और औरत। ट्रांस। उसके साथ। फोरम :. एम /XIX-XX-XXI, 1991।
17. वेल्स्की वी। महिला श्रम औरप्रतिभा। एसपीबी । प्रकार। :t-vaकलाकार। सील, 1900।
18. 18. वोरोनिना ओ.ए. में महिला<мужскомобществе> // समाजशास्त्रीय अध्ययन। 1988, नंबर 2।
19. वोरोनिना ओ.ए. क्या स्त्री पुरुष की मित्र है? मीडिया में एक महिला की छवि आदमी। //1990, नंबर 5।
20. हैम्बर्ग एम। किसान युवाओं का यौन जीवन। एन वें क्षेत्रीय डिवीजन के लाल सेना के सैनिकों के बीच आयोजित एक प्रश्नावली के-प्रिंटिंग।-प्रकार। इन्विट :अनुसार। सरतोव, 1929।

RRIJM 2015, All Rights Reserved 